संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

उर ज्योतिः चक्रथु आर्याय — आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : २८ ● १४ जुलाई, २०१५ अ. आषाढ़ कृ. त्रयोदशी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११६

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दूरदर्शी मानव निर्माण की योजना क्या थी, क्या हम उस पर चल रहे हैं

पं. उम्मेद सिंह विशारद
'वैदिक प्रचारक'

महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न था, कि बालकों को जन्म से पूर्व और पश्चात् सोलह संस्कारों को भट्टी में डाल देने पर वह २५ वर्ष बाद युग को ही बदल देंगें। क्योंकि पुरानी पीढ़ी का स्थान आज के जन्में बच्चे लेंगे और वे जैसे होंगे वैसा ही युग होगा।

महाभारत युद्ध के बाद भारत वर्ष का इतिहास ही बदल गया था। भारतवासी अपनी प्राचीन वैदिक संस्कार संस्कृति, व सम्यता को भूल गये थे। परिणामस्वरूप विश्व गुरू भारत अराजकता एवं उच्च चरित्र संस्कारहीनता के कारण विदेशियों का गुलाम बन गया था और मानव जीवन के निर्माण के १६ संस्कार प्रायः लुप्त हो गये थे। यदि कहीं दो तीन संस्कार बने हुए भी थे तो वह अपश रूप में प्रचलित थे। और वैदिक संस्कार भारत में बीता इतिहास बन गये थे। चतुर अवसरवादी अनार्ष ज्ञान रखने वाले धर्म के ठेकेदारों ने विकृत धर्म और संस्कार व संस्कृति के द्वारा अपना-अपना मत बनाकर दुकाने खोल रखी थी। जन साधारण भारतवासी बुरी तरह से इन धर्म के ठेकेदारों के चंगुल में फंस गये थे।

इतिहास गवाह है जब-जब मानवों ने ईश्वरीय नियम व सृष्टिक्रम व वैदिक संस्कारों की अवहेलना की तब-तब बाह मनुष्यता मरती चली गई। आत्म रक्षा, धर्म रक्षा, समाज रक्षा, और राष्ट्रीय रक्षा के आधार वैदिक संस्कार होते है। और जब यह ही समाप्त हो गये या विकृत बन गये, तो विदेशियों ने इस गिरावट का लाभ उठाया और विश्व गुरू भारत को गुलाम बनाकर नोंच डाला। इस भीष्ण विभीषिका से किसी भी धर्म गुरू को कोई चिन्ता नही थी चिन्ता थी तो केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने की।

ईश्वर की कृपा से अठारहवीं सदी में युग पुरुष महर्षि दयानन्द जी का जन्म हुआ था यह भी सत्य है कि युग पुरुष संसार के कल्याण के ही लिए जन्म लेते है। यह भी सत्य है कि जब-जब ईश्वरीय धर्म वैदिक धर्म समाप्त होने लगता है और चारों ओर अनैतिकता का वातावरण पैदा हो जाता है। तब ईश्वरीय व्यवस्था से महापुरुष सीधे मोक्ष से लौटकर अधर्म का नाश करने को जन्म लेते है। वह कर्मयुक्त जीव होते है, संसार के बन्धनों में नही फंसते है। और संसार को सत्य मार्ग दिखाते-दिखाते अपना जीवन बलिदान कर देते है।

महर्षि दयानन्द जी ने भी रण क्षेत्र में उतरकर सर्वप्रथम वेदों के रूढ़ी अर्थो पर प्रहार करके उनको इतिहास परक न मानकर योगिक अर्थ किये। और उन्होंने समझा था कि सम्पूर्ण भारत में संस्कार हीनता का कारण वेदों का गलत अर्थ करके समाज को दिशाहीन कर दिया है। उन्होंने तत्कालीन तमाम विद्वानों से शास्त्रार्थ किये और वेदों के अर्थो को संसार के सामने रखा। यह एक अद्भुत वैचारिक क्रान्ति थी। जमाने के साथ न चलकर जमाने की गर्दन पकड़कर अपने पीछे चलाया। एक नई वैचारिक क्रान्ति का जन्म हुआ।

महर्षि दयानन्द ने समाज में चल रहे विकृत संस्कारों को वेदानुकूल बनाने हेतु संस्कार विधिं का निर्माण किया। और संस्कार विधि में सोलह संस्कारों को पूर्ण मानव बनाने की योजना तैयार की। उन्होंने समझा संस्कार अपने घर से ही बदले जा सकते है उन्होंने संस्कार विधि में संविधान किया कि बालक माता के गर्भ से ही तीन संस्कार होने चाहिए वह थे गर्भधान, पुंसवन, तथा सीमन्तोन्नयन संस्कार। और जन्म होने के पश्चात् जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्ण भेद, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास और अन्त्योष्टि् कर्म। ये मानव को पूर्ण मानव बनाते है।

उनकी योजना थी कि यदि बालकों को उक्त संस्कारों की भट्टी में तपाया जाए तो युवा होने पर २५ वर्ष की अवस्था में एक नये युग का निर्माण हो सकता है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी का स्थान नई पीढ़ी लेती है। यदि समस्त परिवार सोलह संस्कारों को विधिवत करने लगेंगे तो एक आदर्श युग का निर्माण प्रारम्भ हो जायेगा और वैदिक संस्कारों के चलने से तमाम अनार्ष साहित्य मान्यतायें व क्रियायें समाप्त हो जायेंगी।

सत्यार्थ प्रकाश का निर्माण : महर्षि दयानन्द जी ने अनार्ष ज्ञान कर्मो को समाप्त करने के लिए कालजयी ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारह सम्मुलास में पूर्ण रूप से मानव बनाने का निर्देश दिया। सत्यार्थ प्रकाश ने विकृत समाज में एक हलचल मचा दी। कथित धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिलाकर रख दी। संसार सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर आश्चर्यचकित रह गया कि अब तक संसार वासियों को कैसे मूर्ख बनाया जा रहा था। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ ने एक नया इतिहास ही रच दिया।

आर्यसमाज का गठन : युग पुरुष दूरदर्शी होते है, महर्षि जी ने समझा कि यदि सोलह संस्कारों का चलन नियमित होता रहे और आर्ष विचारों का प्रचार सदैव होता रहे, उसके लिये एक आर्ष संगठन ही होना चाहिए। उन्होंने कोई भी प्रचलित मत या नया मत न बनाकर आर्य समाज का गठन किया या यों कहें महाभारत के पश्चात, प्राचीन आर्य संगठन की पुनरावृत्ति की और जब तक संसार में आर्य समाज रहेगा। आर्ष विचारों का प्रकाश पुंज प्रकाशित होता रहेगा। यह भी मानव निर्माण योजना थी।

महर्षि दयानन्द के अनुयाइयों से निवेदनः महर्षि दयानन्द जी ने मानव निर्माण की पूर्ण योजना हम आर्यो के समक्ष रखी। ज्यों-ज्यों आर्य समाज की उमर बढ़ रही है, वैसे-वैसे आर्य समाज के अनुयायी महर्षि के सिद्धान्तों से हटते जा रहे हैं। उन्होंने कल्पना की थी इस योजना से सारा संसार आर्य बन जायेगा, किन्तु हम स्वयं आर्य नही बन पा रहे हैं। हम अपने हृदय पर हाथ रख कर सोचें क्या हम अपने बालकों के पन्द्रह संस्कार कर रहे है। १६वां तो अन्तेष्टि कर्म परिवार करता है। आर्यो के परिवार भी पाश्चात्य् सभ्यता के शिकार होते चले जा रहे। केवल तीन चार संस्कार ही अधिकांश आर्यो के घरों में होते है।

आज सन्यासी, वानप्रस्थ प्रतिनिधि सभायें व प्रमुख आर्य अपनी कलह से जुझ रहे हैं और अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में संघर्षरत हैं। हम आर्य, आर्य समाज की आत्मा पर आघात कर रहे है। यह कार्य सन्यासी वर्ग वे नेतृत्व व पुरुषार्थी आर्य अच्छी प्रकार कर सकते हैं। आइये हम आज के आर्य समाज को गति देने के लिए, महर्षि दयानन्द जी के उक्त सिद्धान्तों पर चलेंगे वो निश्चय ही २५ वर्ष बाद सम्पूर्ण भारत आर्य बन जायेगा। या अपने विचारों को बदलने पर मजबूर हो जायेगा।

आज के संस्कार-

आज भारत की शिक्षा पद्धति का उद्देश्य भौतिक है, शिक्षा से मानव में सत्य व अध्यात्म संस्कार बनता है। आज नैतिक शिक्षा का आधार संसार खो चुका है। जब युवक पढ़-लिखकर उतरता है तो कोई डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील, साइन्टिसट आदि। उसमें अपने व्यवसाय के प्रति आदर्श सत्यपथ के संस्कार न होने से वह अपने-अपने पदों में भ्रष्टाचार करना शुरू कर देते है, और सारा सामाजिक वातावरण दूषित हो जाता है। और मानव की जगह दानवता पनपने लगती है। शिक्षा का आधार व्यवसायी हो गया है। और ईश्वरीय वैदिक संस्कार न होकर अपने-अपने कथित मजहबों में बालक को जन्म से उसी मत के संस्कार दिये जाते है और उसका जीवन उसी में बीत जाता है। परिणामस्वरूप आपसी विवादों के कारण सारा संसार बारूद की ढेर पर बैठा है।

-गढ़ निवास
मोहकमपुर, देहरादून

वेदामृतम्

शग्धि पूर्धि प्रयंसि च शिशीहि प्रास्युदरम्।
पूषन्निह ऋतुं विद।। ऋग् १.४२.६

(पूषन्) हे पुष्टिशील जीवात्मन् ! (शग्धि) शक्तिशाली बन (पूर्धि) स्वयं को पूर्ण बना (प्रयंसि) प्रयास कर (शिशीहि) स्वयं को तीक्ष्ण बना (उदरं) उदर को (प्रासि) भर। (इह) यहां (ऋतु) कर्तव्य को (विद) जान।

हे आत्मन ! तुम पूषा हो, स्वयं पुष्टिशील हो तथा अपनी प्रजा-रूप मन, बुद्धि, इन्द्रिय आदि को भी पुष्टि दे सकने वाले हो। पर यदि तुम ही परिपुष्ट न होकर निर्बल बने रहे तो शरीर का सारा साम्राज्य ही विकृत हो जाने का भय है। अतः तुम अपने पूषा नाम को सार्थक करो। तुम शक्तिशाली बनो कि जो भी अन्तर्द्वन्द या मायावी कामादि शत्रु तुमसे संघर्ष करने आयें उन्हें परास्त कर सको। तुम स्वयं को पूर्ण बनाओ, पूर्णिमा के चांद के समान पूर्ण हो जाओ। विकास रूका होने के कारण तुममें जो अधूरापन दिखाई देता है, उस अवस्था को दूर करो। वह अधूरापन दूर होगा प्रयास के द्वारा। अतः तुम प्रयास करो, समृद्ध होने के लए प्रयास करो, कर्तव्य पालन के लिए प्रयास करो, अपना दिव्य गुणों का साम्राज्य बढ़ाने के लिए प्रयास करो। स्मरण रखो बिना प्रयास किए स्वयं सफलता द्वार पर आकर खड़ी नहीं हो जाती। तुम स्वयं को तीक्ष्ण करो, जागरूक, प्रतिभावान् तथा प्रखर बनाओ। प्रखरता समस्त शत्रुओं के सम्मुख चुनौती बनकर खड़ी हो सकती है तथा विजय की पताका फहराने में सहायक होती है। इसके विपरीत कुण्ठा संशयों में डालकर पराजय का कारण बनती है।

डा. रामनाथ वेदालंकार

अन्तरंगाधिवेशन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक ०६.०८.२०१५ दिन-रविवार तदनु श्रावण कृष्ण दशमी २०७२ को प्रातः ११ बजे से सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा की अध्यक्षता में आर्य समाज शास्त्री नगर, डी-ब्लाक, मेरठ में होना सुनिश्चित है।

सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य समय से उपस्थित होकर अन्तरंगाधिवेशन को सफल बनायें। अन्तरंग सभा की विषय सूची (एजेण्डा) पृथक डाक से सभी को भेजी जा रही है।

नोट– सभी सदस्यगण मेरठ रेलवे स्टेशन एवं बस स्टेशन से तेजगढ़ी चौराहे पर उतर कर आर्य समाज डी-ब्लाक शास्त्री नगर, मेरठ पहुंचें।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
मो. ०९८३७४०२१९२

देवेन्द्रपाल वर्मा — प्रधान/संरक्षक | **स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती** — मंत्री/प्रधान सम्पादक | **आचार्य वेदव्रत अवस्थी** — सम्पादक

सम्पादकीय.....

प्रदेश सरकार प्रदेश में बढ़ती असुरक्षा को सुरक्षा में बदले और देश की सभी पार्टियां देश हित में ही अपनी योजनाएं लगायें।

आजकल सारे देश में विशेषकर उत्तर प्रदेश में उच्छृंखलता, उद्दण्डता, राहजनी, लूट खसोट बलात्कार और हत्याओं का नग्न ताण्डव हो रहा है। प्रदेश का पुलिस प्रशासन अपराधियों को खोज पाने में असमर्थ सा है। मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने इस पर कई बार रोष भी प्रकट किया है। परंतु उनके रोष का प्रभाव गुण्डा तत्वों पर रंच मात्र भी नहीं पड़ रहा है। मेरी समझ में इसका मूल कारण आजकल देश के सभी राजनीतिक दलों में गुण्डा तत्व अपना स्थान राजनेता के रूप में बना रहे हैं। यदि पुलिस किसी अपराधी को पकड़ना भी चाहती है तो वे राजनेता उसकी रक्षा की ढाल बनकर सामने आ जाते हैं। पार्टी का आधार बनकर दोषी पर आरोप गलत है यह राजनीतिक द्वेषवश लगाया गया है आदि कहकर अपराधी को राजनीतिक कलेवर उढाकर अपराध मुक्त बताने का प्रयास किया जाता है। फलतः अपराध बढ़ते जा रहे है। आज हमारा देश विश्व के अपराधी देशों की श्रृंखला में गिना जाने लगा है।

सभी राजनीतिक दलों के नेता इस पर गंभीर चिंतन करें। सभी अपनी अपनी पार्टी में आने वाले ऐसे लोगों पर सख्ती से रोक लगाये। किसी पर लगे आपराधिक दोष की निष्पक्ष जांच करा कर दोषी को दंडित कराने का मनोबल बनायें। पुलिस प्रशासन को निष्पक्षता से अपना कार्य करने का अवसर दे। पार्टी के आधार पर पुलिस पर कोई भी दबाव न बनाये जाये। उपरोक्त बात कहने या लिख देने मात्र से पूर्ण न होगी। देश प्रदेश की सभी पार्टियों के नेताओं का धर्म बनता है कि वे प्रदेश व देश हितार्थ ऐसे तत्वों को वे कितने भी प्रभावशाली हो अपना समर्थन न दे। प्रत्येक अपराध को अपराध के रूप में ही देखें, पार्टी हित में इसके लिए पक्षपात पूर्ण नीति न अपनाये। आजकल उत्तर प्रदेश में उपद्रव में समाजवादी पार्टी के नेता व कार्यकर्ताओं का नाम समाचार पत्रों में आये दिन आ रहे हैं। परंतु उन उपद्रवियों को पकड़ कर दण्डित करने का समाचार शून्य ही है। एक दिन अखबार में उनका नाम आ जाने के बाद उन पर किसी भी कार्यवाही के किये जाने की सूचना तो अखबारों में पढ़ने को मिलती ही नहीं। कुछ दिन पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज तथा श्रीमती वसुन्धरा राजे मुख्यमंत्री पर कांग्रेस ने तीव्र आक्रमण किया तब भारतीय जनता पार्टी व केन्द्र सरकार उनके बचाव में जुट गयी। जब कि ऐसे आरोप लगने पर दोनों को ही स्वेच्छा से पद त्याग की घोषणा करनी चाहिए थी और दोषमुक्त होने के लिए सच्चे साक्ष्य उपलब्ध कराने चाहिए थे।

स्वतंत्र भारत की पहली कांग्रेस सरकार में रेलवे मंत्री स्व. श्री लाल बहादुर शास्त्री ने एक रेल दुर्घटना होने पर उसे अपनी कमी कहकर रेल मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया था। जिसे सरकार व जन समुदाय सभी ने दुर्घटना को दुर्घटना कहकर शास्त्री जी को त्याग पत्र वापस लेने का दबाव डाला था जिसे उन्होंने कतई स्वीकार नहीं किया था।

आज के सभी पार्टियों के नेता इस अनुकरणीय कार्य को आज क्यों नहीं याद कर रहे हैं, क्यों बहानेबाजी बनाकर पद पर बने ही रहने की बयानबाजी करते रहते हैं। क्यों उनकी पार्टी के लोग उनके पक्ष में चतुराई भरी बयानबाजी करते रहते हैं। आज देश में सभी उपजते दोषों का एक मात्र कारण राजनेताओं में पक्षपात पूर्ण नीति का व्यवहार ही है।

देश के सभी प्रबुद्ध विद्वान, राजनेता इस दुरवस्था पर गंभीर चिंतन करें और राष्ट्र को सर्वतंत्र सुख समृद्धि से पूर्ण बनाने के लिए मनसा वाचा कर्मणा अपनी पक्षपात पूर्ण भावना का परित्याग करने का संकल्प लें। पूर्ण विश्वास है कि संकल्प से देश प्रदेश की दशा में सुधार आयेगा और हमारा देश पूर्व की भांति ही विश्व गुरू पद पर अधिष्ठित होने का अधिकार प्राप्त करेगा।

सम्पादक

स्वर्ग और मोक्ष

प्रताप कुमार 'साधक'

जैसे प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सुख-प्राप्ति का आकांक्षी होता है, वैसे ही आस्तिक व्यक्ति मरणोपरान्त स्वर्ग में जाने की इच्छा रखता है। स्वर्ग और नरक की यह कल्पना लगभग सभी मतों में मान्य है, भले ही नाम जो भी हों। स्वर्ग के लिए शिवलोक, बहिश्त, जन्नत, हैवेन आदि तो नरक के लिए दोज़ख, जहन्नुम, हेल आदि शब्द अलग-अलग मतों के धर्म-ग्रन्थों में मिलते हैं। लगभग सभी मतों में यह मान्यता है कि 'अच्छे' कर्म करने से स्वर्ग और 'बुरे' कर्म करने से नरक में जाना पड़ता है, भले ही अच्छे और बुरे कर्मो की व्याख्या भिन्न-भिन्न है। संक्षेप में कहें तो - स्वर्ग में समस्त सांसारिक सुख और नरक में शारीरिक कष्ट व दुःख प्राप्त होते हैं। अतः स्वाभाविक है कि प्रत्येक मनुष्य नरक से बचना और स्वर्ग में जाना चाहेगा। मानव की इसी कमज़ोरी को समझकर मतवादियों ने स्वर्ग-प्राप्ति के सरल और आकर्षक उपाय (वर्मित) देकर लोगों को अपने-अपने मतो की ओर लाने का प्रयास किया है।

किन्तु ये स्वर्ग और नरक कहाँ हैं व कब प्राप्त होते है ? इन पर अलग-अलग मान्यताएं है। कोई मत मृत्यु के तुरन्त बाद इनकी प्राप्ति मानते हैं, तो कोई प्रलय (क़यामत का दिन) आने पर। प्रायः स्वर्ग ऊपर अर्थात् अन्तरिक्ष में और नरक नीचे अर्थात् पृथ्वी के भीतर किसी काल्पनिक पाताल-लोक में माना जाता है। हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार देवी-देवतागण भी ऊपर स्वर्ग-लोक में निवास करते हैं, जबकि अन्य मतावलम्बी भी ईश्वर को ऊपर (चौथे-सातवें आसमान पर या अन्यत्र) निवास करना मानते हैं। इसीलिए ईश्वर के लिए प्रायः 'ऊपर वाले' शब्द का प्रयोग करते हैं। यद्यपि आज के वैज्ञानिक युग में - जब मानव-निर्मित उपग्रहों द्वारा पृथ्वी के ऊपर और नीचे का अवलोकन किया जा चुका है - इन मतवादियों की कल्पनाओं का कोई आधार नहीं बचा है।

उपरोक्त के अतिरिक्त एक यक्ष-प्रश्न यह भी है कि मरणोपरान्त जीवात्माएँ बिना शरीर के स्वर्ग तथा नरक में क्रमशः सुख और दुःख किस माध्यम से अनुभव करती हैं ? क्योंकि शारीरिक सुख-दुःख अनुभव करने के लिए शरीर का होना अपरिहार्य है। यह उद्घाटित सत्य है कि चक्षु, कान, नासिका, जीभ और त्वचा के माध्यम से ही कोई जीवित प्राणी सुख या दुःख का अनुभव करता है। भला शरीर-विहीन आत्मा को शारीरिक सुख या दुःख कैसे दिया जा सकता है ? निश्चय ही उसके लिए शरीर, इन्द्रियों और मन की आवश्यकता होगी, जो जीवात्मा द्वारा दूसरा जन्म (पुनर्जन्म) प्राप्त कर लेने पर ही सम्भव है। अतः बुद्धिगम्य सत्य यही है कि मरने के बाद प्राप्त योनि (शरीर) ही स्वर्ग तथा नरक है जहां सुख-दुःख प्राप्त होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' में जो परिभाषाएं दी है, उनके अनुसार - ''जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह स्वर्ग कहाता है। और जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, उसको नरक कहते हैं। इसी बात को उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' के नवम समुल्लास में भी लिखा है - ''..... सुख विशेष स्वर्ग और विषय-तृष्णा में फंसकर दुःख विशेष भोग नरक कहाता है। 'स्वः' सुख का नाम है। 'स्वःसुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः अतो विपरीतो दुःखभोगों नरक इति....। उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि स्वर्ग और नरक कोई पृथक लोक नहीं हैं। इसी संसार में रहते हुए हम सभी प्राणी जब सुख या दुःख भोगते हैं तो वही अवस्थाएं स्वर्ग या नरक कहलाती हैं। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य एक ही जीवन में स्वर्ग तथा नरक- दोनों का अनुभव करता है, भले ही उनका प्रतिशत भिन्न-भिन्न हो।

सुख-दुःख को प्रभावित करने वाले मुख्यतः तीन कारक होते हैं- (१) जीव को प्राप्त शरीर अर्थात् जाति (योनि), (२) उस शरीर में रहने की अवधि अर्थात् आयु और (३) उस शरीर में रहते हुए सुख-दुःख देने वाली स्थितियां अर्थात् भोग। योगदर्शन (२-१३) में भी शुभाशुभ कर्मो से बने कर्माशय और कर्मफल से जाति, आयु और भोग का प्राप्त होना-बतलाया गया है - ''सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः।'' कोई जीव अत्यन्त घनी, सुखी परिवार में जन्म लेकर प्रारम्भ से ही स्वर्ग का भोग करता है, तो दूसरा निर्धन, अभावग्रस्त परिवार में आकर अनेक प्रकार से नारकीय जीवन जीने को विवश होता है। जैसी बुद्धि और सुविधाएं मानव को प्राप्त होती हैं वैसी पशु-पक्षियों आदि अन्य जन्तुओं को नहीं। क्या इन विविध योनियों में जीवों को भेजा जाना बिना किसी न्यायपूर्ण नियम एवं व्यवस्था के ही माना जा सकता है ? क्या समस्त जीवों का पिता परमेश्वर स्वेच्छाचारी व अन्यायी है जो जीवों के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार करता है ? पुनर्जन्म न मानने वाले मतों के पास इसका कोई उत्तर नहीं है। वस्तुतः परम न्यायकारी ईश्वर जीवों को किए गए शुभाशुभ कर्मो के आधार पर ही अगला शरीर प्रदान करता है, जिनमें रहते हुए जीव सुख और दुःख भोगते हैं, जिन्हें स्वर्ग और नरक कहा जाता है। 'जाति' की दृष्टि से देखें तो मानव से इतर जितनी भी योनियां हैं, वे ज्ञान-विहीन होने से 'नरक' ही कहलाती हैं, जिनमें रहते हुए जीव अपनी उन्नति नहीं कर सकते। मनुष्य-योनि में स्वर्ग तथा नरक दोनों अंशतः प्राप्त होते हैं तथा जीव कर्म करने हुए अपना उत्थान यहां तक कर सकता है कि जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष के पूर्ण आनन्द को प्राप्त कर ले।

मोक्ष किसे कहते हैं? सांख्य शास्त्र के अनुसार- ''अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः।'' अर्थात् - आध्यात्मिक (शारीरिक पीड़ा), आधिभौतिक (दूसरे प्राणियों से प्राप्त दुःख) तथा आधिदैविक (प्राकृतिक आपदाओं से हुए कष्ट) - तीनों प्रकार के दुःखों से पूरी तरह मुक्त होकर आनन्द स्वरूप परमेश्वर में स्थित, परमानन्द को प्राप्त करने का नाम मोक्ष है। यही मानव मात्र के लिए 'अत्यन्त पुरुषार्थ' है। न्यायशास्त्र के अनुसार-''तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः।'' (१-१-२२) अर्थात्-दुःख के अत्यन्त अभाव और परमात्म के नित्ययोग से प्राप्त परमानन्द का नाम अपवर्ग या मोक्ष है। 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते है- ''सब बुरे कामों और जन्म मरणादि दुःखसागर से छूटकर सुख स्वरूप परमेश्वर को प्राप्त हो के सुख ही में रहना मुक्ति कहाती है।'' मोक्ष को ही मुक्ति, अपवर्ग तथा कैवल्य भी कहते हैं।

वस्तुतः जीव का शरीर में आना ही दुःख का कारण है। कहा गया है - 'शरीर व्याधि कारणम् तथा जहां भोग है, वहां रोग है। शरीर है तो शारीरिक रोग भी होगा और मन है तो मानसिक रोग भी होगा। जन्म हुआ है तो मृत्यु भी होगी । इस प्रकार जन्म-मृत्यु का चक्र चलता रहता है और सुख-दुःख प्राप्त होता रहता है। अतः यदि मृत्यु से बचना है, मृत्युञ्जय बनना है तो पुनर्जन्म से बचना होगा। 'महामृत्युञ्जय मंत्र' में मृत्यु से बचने और मोक्ष का आनन्द पाने की ही प्रार्थना की गई है, न कि इस

शेष पेज ५ पर देखें....

धरोहर.....

आर्य जगत के ब्रह्मर्षि-स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

आयु एवं विद्या से बृद्धत्व को प्राप्त होने पर भी श्वेत दाढ़ी एवं जटाये तेजस्विता की प्रतिमूर्ति विशाल तेजोमय ललाट एवं आखों में स्नेहिल आभा सुन्दर और भारी शरीर सुन्दर गैरिक वस्त्रों की प्रभा से प्रभावी व्यक्तित्व लिए आर्य जगत की शोभा के लिए प्रसिद्धि प्राप्त यदि एक ही नाम से कह दिया जाये तो वे थे स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती वेदमार्तण्ड की उपाधि से विभूषित स्वामी जी जब आचार्य कृष्ण के नाम से जाने जाते थे तब हमारे गुरूदेव स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ ने आपको गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर (गा.बाद) के वार्षिक सममेलन पर बुलाया था और तीन दिन तक ३-३ भाषण अर्थात् ६ प्रवचन आपके हुए थे यह बात १९६८ की है मुझे अच्छी तरह स्मरण है आपने जय-विजय का नाम लेकर महाभारत का प्रकरण सुनाया था और यज्ञ एवं यज्ञोपवीत का रहस्य प्रतिदिन प्रातःकाल सुनाते थे लोगों ने बड़ी श्रद्धा से बड़ी भारी संख्या में सुना था जिसे आज भी याद करते हैं तब से लेकर जीवन के अन्तिम भाषण तक मैं स्वामी जी को सुनता रहा उनकी वाणी का माधुर्य और शब्दों का संयोजन उनकी ऊहा ओर विद्वता को प्रकट करता था व्यक्ति स्वतः ही आकर्षित होता था स्वामी जी ने जीवन में बहुत कार्य किया है वे जीते जागते एक चलती फिरती संस्था थे स्वामी जी जब गुरूकुल प्रभात आश्रम की दशाब्दी पर गये थे तो मैं और स्वामी जी २ दिन १ ही कमरे में रहे तब उन्होंने अपने कुछ संस्मरण सुनाये थे जो मुझे याद हैं स्वामी जी ने बताया कि मुझे (पं. बुद्धदेव जी विद्यालंकार) स्वामी समर्पणानन्द जी यहां छोड़ गए और यहां पर कोई भी व्यवस्था नहीं थी श्रम के अतिरिक्त सब कुछ भिक्षावृति से ही करना पड़ता था ऐसी स्थिति में अपना कार्य चलाना और आश्रम की व्यवस्था को भी ठीक रखना अपना स्वाध्याय करना ये सब कार्य आचार्य कृष्ण ब्रह्मचारी जी की दिन चर्या में नियमित हो गए थे स्वामी जी ने बताया कि क्षेत्र के चौधरी लोग मेरी व्यवस्था से प्रभावित हुए और इधर उनका आना प्रारम्भ हुआ स्वामी समर्पणानन्द जी से जो कुछ पढ़ना चाहता था वह उनकी व्यस्तता इतनी अधिक थी कि समाज कार्यो से इधर संस्था में समय नहीं दें पाये तैयारी स्वयं करनी पड़ी और उन्होंने पं. नरेन्द्र जी हैदराबाद के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि उस व्यक्तित्व के कारण ही मेरी पहिचान हुई है कारण यह हुआ कि पं. जी मुझे हैदराबाद ले गए वेद प्रचार के लिए और पूरे दो मास तक विभिन्न क्षेत्रों में वेद प्रचार किया उन्होंने बताया कि जब मुझे वहां दक्षिणा मिली तो मैने प्रथम चार जीवन में दक्षिणा रूप पैसा प्राप्त कर अनुभव किया कि वेद प्रचार घाटे का सौदा नहीं इसके द्वारा समाज सेवा ऋषि ऋण उतारकर भी बहुत पैसा प्राप्त हो सकता है फिर मुझे अकेले को कितना चाहिए जीवन यात्रा के लिए पर्याप्त सुख की अनुभूति करते हुए वेद प्रचार में लग गए पूरे दक्षिण भारत में प्रचार हो गया और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रसिद्धि भी बहुत मिली आर्य समाज दीवान हाल में केन्द्र बनाकर स्थान-स्थान पर यज्ञो की परम्परा स्थापित की और वेदकथा प्रवचन प्रभावकारी तरीके से आर्य समाज में नव चेतना का संचार करने लगे मैं बराबर स्वामी जी के सम्पर्क में रहा स्वामी जी पूरे देश में प्रसिद्धि को प्राप्त हो गए थे और इनकी इस प्रसिद्धि की सुगन्धि विदेशों में जब निमन्त्रण आया और आपने वहां जाकर प्रचार करने के लिए तीन मास का बीजा बनवाया तो वहां दक्षिण अफ्रिका में बहुत स्थानों पर स्वामी जी के प्रवचनों का प्रभाव पड़ा स्वामी जी ने वहां लोगों को हिन्दी एवं संस्कृत पढ़ाने के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार किया फिर उसी क्रम से पढ़ाया और लोगों को वेदमन्त्रों को शुद्ध उच्चारण बताया यज्ञ करने की विधि को सिखाया लोगों ने तीन मास का समय और बढ़वा लिया उसका परिणाम यह हुआ कि वहां के लोगों में यज्ञ के प्रति आस्था जागृत हो गयी सभी ने मिलकर एक सौ एक यज्ञ कुण्डों पर विधिवत यज्ञ किया वहां वेद पाठी पण्डित एवं यजमान सभी स्वामी जी के निर्देश पर यज्ञ कर रहे थे उसका कई देशों में व्यापक एवं स्थाई लाभ हुआ और सर्वत्र स्वामी दयानन्द जी की जय जयकार होने लगी स्वामी जी ने बताया कि जब वापस चलने लगे तो लोग विदाई के लिए भारी संख्या में उपस्थित थे आर्य समाज सिकन्द्राबाद बु. शहर (उ.प्र) के सम्मेलन पर मैं स्वामी जी के साथ ३ दिन तक रहा और स्वामी जी से विदेश में कार्य करने का तरीका सुनता रहा वहां की स्मृतियां पत्रावली एवं फोटो पत्रवली (एलबम) साथ में दिखाते जाते थे और लग रहा था कि हमारे देश से ज्यादा लोगों में सुनने और समझने की जिज्ञासा-

विदेशों में है यहां आर्य समाज के प्रति लोगों में उत्साह और श्रद्धा का अभाव दिखाई दे रहा है। लेकिन स्वामी जी की कार्य प्रणाली भाषण शैली एवं व्यवहार प्रभावशाली होने के कारण ही ऐसे स्थान पर बीजारोपण किया है जहां कोई कल्पना नहीं कर सकता था मुझे इन बातों से बड़ी प्रेरणा मिलती, मैं सोचता हूँ स्वामी दयानन्द जी महाराज जब कार्य क्षेत्र में आये थे तो उन्हें कौन सी सुख सुविधा थी वे भी ''स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व'' मन्त्र के आधार पर आगे बढ़ रहे थे स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने भी अपना मार्ग इसी आदर्श को अपना कर प्रारम्भ किया उन्होंने साहित्य लेखन को एक नया आयाम दिया। ''यज्ञ सर्वस्व'' उपहार सर्वस्व, ''उपनयन सर्वस्व'' आदि अनेक पुस्तकें स्वयं लिखी और प्रकाशन हेतु भी ''स्वयं जुषस्व'' समर्पणानन्द शोध संस्थान की स्थापना करके अपनी ही नहीं अन्य प्रमाणिक विद्वानों की पुस्तकें भी प्रकाशित करने का धैर्य धारण किया जाता और उसमें बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त की स्वामी जी महाराज को गुरूकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी ने अपने वार्षिक दीक्षान्त समारोह पर ''वेद मार्तण्ड'' की मानद उपाधि प्रदान कर स्वयं को गौरवान्वित किया।

स्वामी जी ने वेदों पर शोध किया और राष्ट्रमृत यज्ञ के विशेष मन्त्र संग्रहीत करके इस यज्ञ को प्रतिष्ठित किया फिर ''सत्यार्थ प्रकाश'' के १४ समुल्लासों पर भी मनन किया और ''सत्यार्थमृत'' यज्ञ की परिकल्पना की १४ .वेदियां बनाकर सर्वप्रथम उदयपुर में यज्ञ कराया बड़े बड़े सम्मेलन अथवा शताब्दियों के यज्ञों पर ब्रह्मा के रूप में आपको देखकर ही लोग कृतकृत्य हो जाया करते थे गुरूकुल गौतमनगर नई दिल्ली के प्रत्येक यज्ञ पर आप ही शोभा बढ़ाते रहे वहां पर आपके श्री चरणों में बैठकर कुछ सुनने और समझने का शुभ अवसर मिलता रहता था मेरा यह भी सौभाग्य ही रहा है कि जीवन का अन्तिम सन्देश भी मैं गुरूकुल नोएडा के दशाब्दी समारोह पर सुन सका कुछ स्वास्थ्य अच्छा प्रतीत नहीं हो रहा था लेकिन उग्रता एवं शालीनता का उदाहरण अन्तिम क्षणों में भी गुरूदत्त विद्यार्थी की तरह हमें प्रभावित कर गया जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता मेरे से धीरे से कहा आचार्य जी (उस समय मैं डॉ. धर्मपाल आर्य के नाम से कार्यरत था) आपकी आज्ञा हो तो पहले मैं कुछ बोल दूं मैं आज आपका भाषण नहीं सुन सकूँगा बुरा मत मानना मेरा आज स्वास्थ्य ठीक नहीं है बैठे बैठे बहुत देर हो गई है जाना चाहता हूँ मैने सहजभाव से कहा स्वामी जी मुझ बालक को आप लज्जित न करें। आप बोले जायें स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देवें इसके बिना सब कुछ बेकार है मुझे क्या पता था आज कहां जाने की बात कर रहे हैं कितनी स्वाभाविकता और सौजन्यता लेकिन अन्तरात्मा की पुकार कि मैं जाना चाहता हूँ एक लम्बी यात्रा पर फिर पुनः इस रूप में के दर्शन नहीं कर सकेंगे जीवात्मा तो अभी अपना चमत्कार दिखाने आयेगी तब तक हम जाने की तैयारी कर लेंगे उनका कहना अब भी बार बार याद आता है कि दीक्षानन्द आच्छा खाता है अच्छा पहनता है, अच्छा पढ़ता है, अच्छा लिखता है, अच्छा सोचता है, और अच्छा बोलता है वास्तव में वे आर्य जगत् के ब्रह्मर्षि थे यज्ञों के पर्यायवाची मृदुभाषी होकर भी चिन्तन शैली में नई ऊहा प्रदान करते थे उनका अन्तिम भाषण आर्य समाज के लिए एक चिन्तन पर चुनौतीपूर्ण सन्देश था। आज लग रहा है स्वामी जी के हृदय में पीड़ा है इस दर्द भरी पीड़ा को आर्यजन कब समझेंगे और सच्चे आर्यत्व से जुड़कर देश धर्म के प्रति वेद एवं ऋषिवर, दयानन्द के प्रति कब अपना जीवन सर्मपण करेंगे जिस समर्पण में दीक्षा का आनन्द हे प्रभो। हमें समर्पण एवं दीक्षा में आनन्द अनुभव हो ऐसी प्रेरणा प्रदान करो।

गुरूकुल पूठ
गढ़ मुक्तेश्वर-हापुड़
मो. ९८३७४०२१९२

विज्ञान का आदि स्रोत परमेश्वर है

श्री हरिश्चन्द्र आर्य 'वैदिक'

परमेश्वर ने प्रत्येक सृष्टि को दो तत्वों के मिलन से बनने का नियम बनाया है। प्रकृति केवल प्रकृति नहीं है, वह तीन सत, रज और तम कणों के गुणों से युक्त है। अतः ईश्वरीय नियम के अनुसार प्रकृति के परमाणुओं के समूहों से जितनी सृष्टियाँ और जितने पदार्थ बने हैं वे सब विशेष मात्रा के हिसाब से बने हैं।

परन्तु इन प्राकृतिक पंचतत्वों (देवों) के सन्तुलन में- वृक्षों की कटाई, पहाड़ों की खोदाई और सुरंग आदि के होने तथा वायु जलादि में प्रदूषण के फैलने से अतिवृष्टि, बज्रपात तथा अनावृष्टि इनसे अन्नोत्पादन का क्षति होना और गौ हत्या एवं नारी अपहरण, बलात्कार, भ्रूण हत्या जैसे धरती माता पर माताओं के प्रति पाप होते रहने से भूकंप आदि द्वारा अनेक तबाही होती है।

देखिये-दि० २५ अप्रैल, २०१५ को नेपाल के भूकंप ने प्रायः सारे भारत को हिला दिया। दिन ११ बजे से जोर से भूकंपन होने लगा था, प्रायः १ एक मिनट तक हुआ, उसके पश्चात दूसरे दिन भी १२ बजकर ४२ मिनट पर फिर भूकंप का झटका हुआ, जिससे नेपाल तो बरबाद हुआ ही आस-पास के देश-प्रदेश के कुछ लोग भी मारे गये और घायल भी हो गये। भूंकप से नेपाल में प्रायः १० हजार से अधिक लोग मारे गये और हजारों लोगों का घर मकान ध्वस्त हो गया, तथा कई हजार लोग घायल हो गये। मुम्बई को छोड़कर सारा भारत हिलगया था। कहा जाता है कि जैसे जापान के हिरोसीमा में परमाणु बम गिरा था, उससे ५०० गुणा अधिक शक्तिशाली जैसे भूकंप ने नेपाल आदि देशों को तबाह कर दिया था।

तात्पर्य यह कि भले ही किसी के समझ में न आये पर यह सब दैवी शक्तियों के छेड़खानी का ही परिणाम है। उदाहरण के लिये जैसे ईश्वर मानव के प्रार्थनाओं को देखता है, वैसे ही धरती पर हो रहे पाप और अत्याचार को भी देखता है। किन्तु ईश्वर का नियम ऐसा है कि सारे संसार का सर्वनाश नहीं होने देता, क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर के नियम में रक्षा के साधन अधिक है। यदि अधिक न होता तो सारे विश्व का भूकंप आदि द्वारा सर्वनाश हो जाता। यदि रक्षा के साधन न होते तो सूर्य की किरण वायु मण्डल के स्तरों से छनकर तीरछा एवं कोमल बनकर प्राणियों के लिये जीवन उपयोगी न बनता। यदि पशु-पक्षी आदि प्राणियों में ईश्वरीय नियम ममत्व और प्रेम न देता तो कोई भी प्राणी अपने-अपने बच्चों से प्यार न करते, और तब उन सबकी वंश वृद्धि भी न होती।

अतः एक ऐसी दिव्य सर्वव्यापक प्राण के समान सर्वत्रपूर्ण किसी भी यन्त्र से न दिखने वाला आत्मा से भी सूक्ष्म परमात्मा है। जो ध्यानियों की दृष्टि में प्राण और मन की एकाग्रता से प्रकाशमय दिखता है, उस अलौकिक प्रकाश को देखकर ध्यानी एवं साधक जन आनन्द से मर जाते हैं।

परमाणु के गर्भ में न जाने अभी कितनी रहस्यमयी शक्ति छिपी हुई है, इनकी खोज वैज्ञानिको द्वारा अभी हो रही है।

किन्तु दार्शनिक दृष्टि से जैसे धूम्र को देखकर अग्नि का, पढ़ते हुए विद्यार्थी को देखकर विद्या का ज्ञान होता है वैसे ही मस्तिक साधना से आत्मा के गुण चेतना और अल्पज्ञता का ज्ञान इसलिये होता है कि सृष्टि के आदि में एवं सारी सृष्टि से परे सर्वशक्तिमान एवं सर्वश्रेष्ठ तेजोमय अभौतिक ईश्वर में चैतन्यता एवं सर्वज्ञता विद्यमान था और है तभी तो उसके विज्ञान संगत प्राकृतिक नियम द्वारा पृथिवी से लेकर सूर्य चन्द्रमा की इस प्रकार रचना की ताकि पांचो तत्व जीवन उपयोगी बनकर इस भूमि को सबसे पहले प्राणी जगत से पूर्ण किया जा सके, और अंत में एक ही वार एक विशेष जाति के प्राणी ऐसे उत्पन्न की जो धीरे-धीरे परिवर्तन होकर हजारों की संख्या में युवा और युवतियों के रूप में प्रकट हो गये और उनके मस्तिष्क को उसके नियम ने इस लायक बना दिया जिसके माध्यम से आत्मा अपने अल्प सामर्थ के अनुसार चेतना और ज्ञातृत्व गुण को प्राप्त कर सके, और स्वाभाविक ज्ञान के अलावा वेद-विद्या द्वारा नैमितिक ज्ञान से अपने को सब विकसित कर सकें।

तात्पर्य यह कि सबसे पर ईश्वर की चैतन्यता सर्वज्ञता हृदय रूप से सृष्टि में विद्यमान है, यदि न होता तो मानव चेतना और ज्ञान से हीन होता, किन्तु ऐसा नही हुआ क्यों कि इस सत्यम, शिवम् और सुन्दरम् विश्व के लिये परमेश्वर ने बुद्धि पूर्वक पंचतत्व को जीवन उपयोगी इसलिये बनाया ताकि सारे शरीरधारी प्राणी उत्पन्न हो सके और सर्वश्रेष्ठ मानव को उत्पन्न इसलिये किया कि वह धर्म और विज्ञान द्वारा अपने और संसार का उपकार करे तथा अष्टांग योगाभ्यास द्वारा सच्चे शिव अर्थात ओम् प्रणव परमेश्वर को समझे।

परमेश्वर स्वयं विज्ञान स्वरूप है, उनकी प्राकृतिक रचनाओं के माध्यम से जो कुछ बनते हैं वे सब स्वाभाविक नियम से विज्ञान संगत बनते हैं।

जैसे चन्द्र और वायु के योग से समुद्र में ज्वार भाटा एवं उनसे लहरें। चन्द्र से ही सामुद्रिक जीवों का विकास होना हिमालय का टिके रहना, अन्न का पुष्ट होना और शीत लहरी को विखेरना आदि। सूर्य की किरणों से ऊर्जा की प्राप्ति होना, फूलों में रंग बनना। सूर्य के ताप से समुद्र के नमकीन जल, वाष्प होकर वायु के योग से ऊपर उठकर बादल बन जाना और वही जल बादलों में फिल्टर होकर धरती पर बरसना, साथ ही वायु के बहाव से काले-काले दे विरोधी बादलों के टकराव से विजुली की चमक के साथ गर्जन उत्पन्न होना, (यहाँ भी वैज्ञानिक प्रक्रिया है, प्राकश की गति तीव्र होने से वह आगे पहुंचता है और ध्वनि की गति उससे कम होने से उसके बाद पहुचता है।) और उन्हीं बादलों के जल विन्दु जब टेम्प्रेचर गिरते, गिरते जैसा ही हिमबिन्दु (३२ फार्नहाइटः सेंटीग्रेट पर पहुचता है, वे एका एक बर्फ के टुकड़े बनकर बरसने लगते है।)

यदि परमेश्वर ने वायु में नाइट्रोजन तत्व की मात्रा प्रतिशत ७८.०३ भाग उत्पन्न न किया होता तो कोई प्राणी शुद्ध आक्सीजन के अभाव में उत्पन्न न हो पाता। वायु के हल्का होने से भी कोई जीवित न हो पाता। (चन्द्र आदि कुछ लोक ऐसे हैं जहां वायु हल्का, ताप अधिक एवं जीवन उपयोगी तत्व नहीं बने है) जब तक परमात्मा ने वायु मण्डल का परस्पर ऊपर-ऊपर सात स्तर नहीं बनाया था तब तक सूर्य का सीधा किरण धरती पर आने से कोई भी प्राणी उत्पन्न नहीं हुआ था। जब सागर के सम्बन्ध से वायु का ऊपर-ऊपर सात स्तर बन गया, तब सूर्य का किरण उन स्तरों से घ्रनकर तीरक्षा एवं कोमल बनकर आने से उनके प्रकाश से ऊर्जा और पांच सूक्ष्म भूतों के योग, तथा अनेक प्रकार के रसायनिक तत्वों के समबन्ध से विभिन्न प्रकार के प्राणियों की उत्पत्ति होने लगी।

प्र०- क्यों ईश्वर मनुष्य जैसा चैतन है ? उत्तर - नहीं क्योंकि मनुष्य अल्प सामर्थ वाला अल्पज्ञ चेतनयुक्त और वह एक देशी होने से उसकी आत्मा एक शरीर को छोड़ दूसरे शरीर के लिये जन्म धारण करता है अतः उसका संयोग वियोग होता रहता है। किन्तु परमात्या, आत्मा से भी सूक्ष्म होने से सर्वव्यापक, सर्वशक्ति सम्पन्न ऊर्जावान है, उसमें चैतन्यता और सर्वज्ञता का भी गुण विद्यमान है। (जैसे वायु में प्राण) (आक्सीजन) विद्यमान है, वैसे ही प्राण से भी सूक्ष्म सामर्थ परमेश्वरतत्व में चैतन्यता विद्यमान है।

उदाहरण के लिये - आत्मा में जो चेतन एवं ज्ञान करने का गुण है उसे प्रकट करने के लिये परमात्मा ने मानव शरीर के उपरी भाग में मस्तिष्क का निर्माण इसलिये कर दिया ताकि वह चेतन द्वारा ज्ञान की उपलब्धि तथा सोच विचार कर सके। वह अपने लिये नही किया (क्योंकि वह तो स्वयं विज्ञान स्वरूप है) मानव के लिये किया। इससे सिद्ध हो जाता है कि वह मस्तिष्क से परे गुरूओं का गुरू है। ईश्वर तो परमाणु के तोड़े हुए जो इलेक्ट्रान एवं नाइट्रो आदि कण हैं, उनसे वह इतना सूक्ष्म है जिसे न तोड़ा जा सकता है न पकड़ा जा सकता है और न उसकी कोई गति है। यदि वैज्ञानिक जन ईश्वर तत्व तक पहुँच भी गये तो उन्हें उनकी चैतन्यता सर्वज्ञता दिखलाई नहीं देगी।

मान लीजिये जैसे कोई महान वैज्ञानिक खड़ा है और यदि कोई अपरिचित व्यक्ति उसे देखेगा तो क्या समझेगा ? यही न कि वह भी एक साधारण मनुष्य है। किन्तु जब उस साधारण मनुष्य को किसी वेदज्ञ ने उसका परिचय दिया कि वह एक महान वैज्ञानिक है उन्होंने विमान विजुली और चन्द्रयान आदि का निर्माण किया है। तब उस साधारण व्यक्ति को ज्ञात हो जाता है कि वह कोई मेरे जैसा मामुली व्यक्ति नहीं है। इसी प्रकार ज्ञानस्वरूप परमेश्वर है जिसे वैज्ञानिक जन समझ नही पा रहे हैं कि यह ब्राह्मण ब्रह्म का ही विराट रूप है, जिसे शरीर साधन से देखने वाला आत्मा और दिखाने वाला परमात्मा है।

हम लोग विधाता को ज्ञान-विज्ञान से पूर्ण इसलिये मानते है कि विभिन्न प्रकार के प्राणियों एवं सर्व श्रेष्ठ मानव शरीर की रचना आदि सृष्टि में पंचतत्वों के सूक्ष्म भूतों अर्थात पांच तन्मात्राओं (शब्द रूप, स्पर्श, रस और गन्ध) के परमाणुओं से मानव आदि के शरीर के डिजाइन में आत्मा को ज्ञान करने के लिये द्यौः से मस्तिष्कऔ उन तन्मान्नाओं से पांच ज्ञानेन्द्रियां, तथा मुख्य प्राण से (पांच, प्राण अपान, व्यान, उदान और सामान) पांच कर्मेन्द्रियां। इसके अलावा शरीर के अन्दर के उपकरणों हृदय आदि, मुख्य प्राण से प्राणापान द्वारा अन्न से रस, रक्त, मज्जा आदि सप्त धातुओं से उसे पुष्ट करने की विद्या एवं तमाम प्राणियों के सांचे पहले से बनने का विज्ञान उस ईश्वरीय नियम में विद्यमान था, तभी सब प्राणी उत्पत्तिकाल में क्रम से सांचे के अनुसार आत्मा उनके शरीरों को गर्भ से जन्म लेकर कर्मानुसार सुख, दुःख को भोगने लगा।

सूक्ष्म शरीर का मौलिक प्राण तो दिखता नहीं है, पर जब थोड़ी देर के लिये स्वांस प्रस्वास बन्द कर दिया जाता है तो प्राण का अस्तित्व बोध होने लगता है। वैसे ही वैभव पूर्ण सृष्टियों को जब देखा जाता है कि कैसे किस विधि विज्ञान से पांचो तत्व एवं सूर्य चन्द्रादि बने। भूगर्म में किन किन परिवर्तनों तापक्रम एवं रासायनिक तत्वों से कोयला, तेल गैस आदि तथा लोहा, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, शीशा, पारा, अबरख आदि और हीरा आदि रत्न तथा

शेष पेज ६ पर देखें....

शासनादेश

सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।
सेवा में,
शिक्षा निदेशक (बेसिक)
उ०प्र० लखनऊ।

शिक्षा अनुभाग-६ लखनऊ - दिनांक २६ जून, २०१५

विषयः मा० न्यायालय के आदेशों के अनुपालन में अनुदान सूची में सम्मिलित सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालयों में अध्यापकों की संख्या एवं वेतन भुगतान हेतु अनुमन्यता के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या-सं०नि०बे०/७५०५/ २०१५-१६ दिनांक १३-६-२०१५ के सन्दर्भ में मुझे आपसे यह कहने का निर्देश हुआ है कि सिविल अपील सं०-३६८६/२००६ उ०प्र० राज्य बनाम पवन कुमार द्विवेदी व अन्य में पारित मा० उच्चतम न्यायालय के आदेश दिनांक ०२.०६.२०१४ एवं उक्त निर्णय के अनुसरण में मा० उच्च न्यायालय द्वारा पारित विभिन्न निर्णयों के अनुपालन में अनुदान सूची में सम्मिलित जू०हा०स्कूल से सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालयों में अध्यापको की संख्या योग्यतायें एवं वेतन भुगतान के सम्बन्ध निम्नानुसार कार्यवाही की जाय -

(१) सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालयों में अध्यापकों की अनुमन्य संख्या निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम २००६ में वर्णित मानकों के अनुसार निम्नानुसार निर्धारित की जायेगा।

कक्षा - पहली से पांचवी कक्षा के लिए

छात्र/छात्राओं की संख्या -	शिक्षकों की संख्या
साठ तक	दो
इकसठ से नब्बे तक,	तीन
इक्कानवे और एक सौ बीस के मध्य	चार
एक सौ इक्कीस और दो सौ के मध्य	पाँच
दो सौ से अधिक	छात्र-शिक्षक अनुपात चालीस से अधिक नहीं होगा।

सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालय में अध्यापकों की संख्या निर्धारित करने हेतु कक्षा-१ से ५ तक की छात्र संख्या का आंकलन करने के लिए अनुदान में सम्मिलित विद्यालय का जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी व खण्ड शिक्षा अधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से तीन आकस्मिक निरीक्षण किया जायेगा तथा तीनों निरीक्षण के दौरान उपस्थित वास्तविक औसत छात्र संख्या के आधार पर उपरोक्तवत् निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम २००६ के मानकों के अनुसार अध्यापकों की संख्या अनुमन्य की जायेगी।

(२)- सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालयों के लिए प्रधान अध्यापक का पद एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का कोई पद अनुमन्य नहीं किया जायेगा।

(३)- सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालयों में अध्यापकों की योग्यतायें नियुक्ति का अनुमोदन उत्तर प्रदेश मान्यता प्राप्त बेसिक स्कूल (अध्यापकों की भर्ती तथा सेवा की शर्ते और अन्य शर्ते) नियमावली-१६७५ की धारा-६ के अनुसार होना आवश्यक है।

(४) सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालयों के शिक्षकों के वेतन भुगतान की अनुमन्यता का अधिकार मण्डलीय समिति में निहित होगा।

(५) सहायता प्राप्त जूनियर हाईस्कूलों से सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालयों को अनुदान सूची पर लिये जाने के फलस्वरूप संबंधित जूनियर हाईस्कूल एवं संबंधित सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालय के पूरे स्टाफ के वेतन भुगतान हेतु अनुदान की धनराशि वित्त नियंत्रक द्वारा एक साथ अवमुक्त की जायेगी। सहायता प्राप्त जूनियर हाईस्कूलों के शिक्षक/शिक्षणेत्तर-कर्मचारियों की भांति सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालयों के अनुमन्य शिक्षकों का वेतन भुगतान जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं वित्त एवं लेखाधिकारी, बेसिक शिक्षा द्वारा किया जायेगा।

(६) अनुदान सूची में सम्मिलित जूनियर हाईस्कूलों से सम्बद्ध प्राइमरी विद्यालयों के अनुमन्य अध्यापकों के वेतन भुगतान हेतु अनुदान माननीय सर्वोच्च न्यायालय/मा० उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश के दिनांक से अनुमन्य होगा।

कृपया उक्तानुसार कार्यवाही कराया जाना सुनिश्चित करें।

भवदीय
(एच०एल०गुप्ता)
सचिव।

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज उसाँवा जनपद बदायूँ का १६वाँ वार्षिकोत्सव १८, १६ व २० जून को धूमधाम से मनाया गया। इस आयोजन के अन्तर्गत नित्य प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक देवयज्ञ भजन उपदेश का कार्यक्रम चलता रहा अपरान्ह ३ बजे से ६ बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा वेद सम्मेलन गौरक्षा सम्मेलन हुआ। रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक महिला सम्मेलन कुरीति आदि सम्मेलन वेदोपदेश का आयोजन सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम में बिजनौर से पधारे पं. योगेश दत्त भजनोपदेशक श्री प्रभात कुमार आर्य रूद्रपुर, स्वामी क्षमानन्द जी शाहजहांपुर, पं. रामेश्वर दयाल आर्य बदायूँ व हरिदेव मुनि वानप्रस्थी भटौली उपस्थित रहे।

धर्मवीर सिंह आर्य
प्रधान आर्य समाज, उसांवा

आर्य समाज सुमेरगंज का 67वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सुमेरगंज (बाराबंकी) आर्य समाज सुमेरगंज का ६७वां वार्षिकोत्सव बड़े ही धूमधाम के साथ दिनांक २६ से २८ जून, २०१५ तक स्थानीय सरस्वती विद्यालय इण्टर कालेज राम सनेही घाट में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती ने संन्ध्या के मंत्रों की व्याख्या करते हुये कहा कि सन्ध्या पूर्ण योग है सन्ध्या का अर्थ सम्यक प्रकार ध्यान है। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में विमल किशोर आर्य 'वैदिक प्रवक्ता' ने राष्ट्र के शत्रुओं की ओर संकेत करते हुये कहा कि अमेरिका देश को आर्थिक गुलामी की ओर ले जाना चाहता है। पैट्रो डालर के बल पर धर्मान्तरण करने का षडयन्त्र विदेशी शक्तियां कर रही हैं उन्होंने आतंकवाद आदि की चर्चा करते हुये शुद्धि आन्दोलन पर बल दिया।

इसके अतिरिक्त श्री सत्य प्रकास आर्य भजनोपदेशक बाराबंकी विमल देव अग्निहोत्री बरेली ने स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिकारियों एवं शहीदों का इतिहास बताते हुये श्रीमती गीता शास्त्री बहराइच ने आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के महिलाओं एवं हरिजनों पर किये गये उपकारों को भजनों द्वारा प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर श्री जुगुल किशोर आधुनिक अर्जुन द्वारा शब्द भेदी वाण विद्या प्रदर्शन द्वारा दर्शकों को चकित कर दिया। यज्ञ की पूर्ण आहुति दिनांक २८ को सम्पन्न हुई जिसके मुख्य यजमान डॉ. राकेश शंकर गुप्ता (मंगलम् पाली क्लीनिक) बाराबंकी सपत्नी रहे। इसके अतिरिक्त दीपक, पदम कुमार, दुर्गेश भी यज्ञ के यजमान बने। कार्यक्रम का संचालन राम कुमार श्रीवास्तव ने किया उत्सव को सफल बनाने में मुरलीधर मिश्र, दीपू, ब्रजेश गुप्ता, सतीश, लक्ष्मी शंकर गुप्ता, शिवराज का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

प्रवेश सूचना

गुरूकुल महाविद्यालय रुद्रपुर, तिलहर शाहजहाँपुर (उ.प्र.) प्रवेश प्रारम्भ है। संस्कृत, व्याकरण, संस्कृत साहित्य, तथा आधुनिक विषय अंग्रेजी, गणित विज्ञान सहित, प्रयोगशाला एवं कम्प्यूटर की शिक्षा उपलब्ध है। रहने तथा भोजन की उचित व्यवस्था है। शीघ्र सम्पर्क करें। स्थान सीमित है, प्रवेश निःशुल्क तथा मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति की सुविधा आने का मार्ग-यह गुरूकुल शाहजहांपुर में तिलहर रेलवे स्टेशन से ३ किमी. दूरी पर है रिक्शा तथा टैम्पो के द्वारा आया जा सकता है।

सम्पर्क सूत्र-८४००४५३६५१, ८३५४६८६१७६

भारतीय कला-साहित्य एवं पत्रकारिता निर्देशिका का प्रकाशन

कानपुर! रिक्तियां रोजगार समाचार प्रकाशन समूह भारत के सभी राज्यों के कवियों, शायरों, गीतकारों, लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, कार्टूनिस्टों, चित्रकारों, शिल्पकारों, मूर्तिकारों, रंगकर्मियों, गायकों, संगीतकारों तथा अन्य विधाओं के कलाकारों की एक महत्वपूर्ण रंगीन डायरेक्ट्री प्रकाशित करने जा रहा है। इसमें देश के किसी भी प्रांत एवं भाषा के इच्छुक लोग अपना विवरण प्रकाशित करा सकते हैं। प्रविष्टि के लिए पूरा नाम, जन्मतिथि, शिक्षा योग्यता, कार्य विधा, महत्वपूर्ण उपलब्धियां कृतियां, सम्मान/अवार्ड, फोन नं., ई-मेल तथा वर्तमान पूरा पता लिखकर सहयोग राशि ३००/-रुपये नकद/मनीआर्डर/चेक/ड्राफ्ट के साथ एक रंगीन फोटो सहित सम्पादक-डॉ. अनिल कटियार, १०५८(ए), ड्ब्ल्यू-१ ब्लॉक (निकट-सुशीला हॉस्पिटल), साकेत नगर, कानपुर-२०८०१४ (उ.प्र.) के पते पर २५ सितम्बर २०१५ से पहले भेज दें। अधिक जानकारी के लिये मोबाइल नं. ६८३६१६७६३६ पर सम्पर्क कर सकते हैं। प्रकाशनोपरांत सभी प्रविष्टिदाताओं को डायरेक्ट्री की एक प्रति निःशुल्क रजिस्टर्ड डाक से भेजी जाएगी। इस डायरेक्ट्री को विश्व भर में अवलोकनार्थ इंटरनेट पर भी उपलब्ध कराया जाएगा।

-डॉ. अनिल कटियार-सम्पादक
१०५८(ए), डब्ल्यू-१ साकेत नगर,
कानपुर-२०८०१४

तीन पुस्तकों से क्रान्तिकारियों को मिली थी प्रेरणा

-खुशहाल चन्द्र आर्य

क्रान्तिकारियों को जीवन बलिदान देने की जिन तीन पुस्तकों से प्रेरणा मिली थी। वे तीन पुस्तकें इस भाँति है :-

१. गीता :- गीता श्रीकृष्ण भगवान ने महाभारत के युद्ध के समय जब कौरवों और पाण्डवों की सेना लड़ने के लिए आमने-सामने खड़ी थी। उसी समय अर्जुन ने अपने सामने दादा भीष्म, गुरू द्रौण गुरू कृपाचार्य व अन्य सगे-सम्बन्धियों को लड़ने के लिए खड़ा देखा तो अर्जुन को मोह पैदा हो गया और कृष्ण से कहा, हे! केशव, मेरे सम्मुख लड़ने के लिए दादा भीष्म खड़े हैं, गुरू द्रौणाचार्य, गुरू कृपाचार्य व अन्य सगे-सम्बन्धी खड़े हैं, जिनकी गोद में मैं पलकर बड़ा हुआ हूँ,तो आज मैं इनके ऊपर तीर कैसे चला सकता हूँ। और निराशा से अर्जुन का शरीर इतना अधिक शक्तिहीन हो गया कि उसके हाथ से गाण्डीव धनुष भी गिरने लगा, वह मोह में इतना अधिक ग्रसित हो गया और उसने कहा कि हे! केशव, इन बुजुर्गो व सम्बन्धियों को मारकर मुझे राज्यगद्दी पाने की बजाय भीख मांगकर खाना भी अच्छा है। मैं अपनों के ऊपर बाण नहीं चलाऊंगा और गाण्डीव को दूर फेंककर नैराश्य भाव से बैठ गया, तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को आत्मा की अमरता का सन्देश दिया साथ ही क्षत्रिय धर्म का पालन करना तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है समझाया जिससे अर्जुन का मोह टूटा और युद्ध करने के लिए तैयार हुआ। जो उपदेश श्री कृष्ण ने अर्जुन को महाभारत युद्ध के समय दिया। उन्हीं उपदेशों की संग्रहित पुस्तक को गीता कहा जाता है।

गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को अपने कर्तव्य का बोध करवाते हुए कहा कि है! पार्थ तुम क्षत्रिय होकर यह कायरों जैसी बात क्यों करते हो। क्षत्रीय का धर्म है कि वह अन्याय करने वाले को तथा जो अन्याय का पक्ष लेता है, वह भी अन्यायी ही है, इसलिए अन्यायियों को मारना क्षत्रियों का धर्म होता है, इसलिए तुम अपने कर्त्तव्य से दूर मत भागो। दूसरी बात श्री कृष्ण ने यह कही कि शरीर मरता है, आत्मा नहीं मरती। वह पहला शरीर मरने के बाद दूसरा शरीर धारण कर लेती है। जितने ये तुम्हारे सगे-सम्बन्धी है जो अन्याय के पक्ष में खड़े हैं, ये सब अन्याय के कारण मर चुके हैं, तुम्हें तो इनको मार कर केवल श्रेय ही लेना है। सबसे बड़ी बात यह कही कि यदि तुम युद्ध नही करोगे तो तुम्हें अपयश मिलेगा। क्षत्रिय के लिए अपयश से जीना, मृत्यु से भी बुरा है। यदि तुम युद्ध करोगे और जीत जाओगे तो तुम्हें धरती का राज्य करने को मिलेगा और यदि हार गये तो तुम्हें स्वर्ग मिलेगा यानि मोक्ष मिलेगा जिसमें तुम मरने के बाद आनन्द से रहोगे। इस प्रकार तुमको दोनों हालत में लाभ ही लाभ है। आत्मा की अमरता की पुष्टि के लिए गीता में अनेकों श्लोक आये हैं जिनमें मनुष्य जीवन को कैसे जीया जाये। यह शिक्षा भरी हुई है। इसके उपरान्त भी दो श्लोक ऐसे हैं जिनमें आत्मा की अमरता का सन्देश विशेष रूप से है। वे इस भांति हैं।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृहणानि नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि ही।।

अर्थ :- जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को धारण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को धारण करता है। ।।२२।।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारूतः।। ।।२३।।

अर्थः- इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नही जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकती।

इन श्लोकों से ही हमारे देश के क्रान्तिकारी भाईयों ने आत्मा की अमरता को समझा और जब मुख्य न्यायाधीश उनसे पूछता था कि तुम्हें फाँसी देवें या आजीवन जेल। तब क्रान्तिकारी यही कहते थे कि हमें आप फाँसी दे दीजिये ताकि हम मरकर फिर भारत में ही जन्म लेवें और अठारह वर्ष बाद फिर हम नौजवान होकर फिर देश की स्वतन्त्रता के लिए फाँसी पर चढ़ें। आजीवन जेल में रहकर अपने जीवन को बर्बाद नहीं करेंगे। यह था उनके ऊपर ''गीता'' का जादू।

(२) - सत्यार्थ प्रकाश :- महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में देशभक्ति की अनेकों बाते लिखी हैं जैसे - भारत वह पारस पत्थर है जिसके छूने मात्र से ही विदेशी लोग लोहा से सोना बन जाते थे यानि विदेशी लोग भारत में आकर शिक्षा प्राप्त करके शिक्षित व धनाढ़्य बन जाते थे और अपने जीवन को सुखी बना लेते थे दूसरा आर्यो के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों पर राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यवर्त्त में भी आर्यो का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है, जो कुछ है, सभी विदेशियों से पादाकान्त हो रहा है। सबसे बड़ी बात देशभक्ति की महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में यह लिखी है कि विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा हो यानि माता-पिता के समान कृपा, दया व न्याय रखने वाला भी क्यों न हो, वह भी स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं होता। इसी को पढ़कर लोकमान्य तिलक ने कहा था कि स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। और क्रान्तिकारियों को भी महर्षि का यह सन्देश, उनमें देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए बलिदान देने की भावना को उत्साहित किया। देश को आजादी दिलवाने के लिए दस-बीस ही नहीं सैकड़ों आर्य समाजियों ने देश की बलिवेदी पर अपना पूरा जीवन समर्पित किया जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द, लालालाजपत राय, श्यामजी कृष्ण वर्मा, सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानन्द व लाला हरदयाल मुख्य हैं।

(३) १८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य - समर - १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम को अंग्रेजों ने सेना का विद्रोह की संज्ञा दे रखी थी जिससे देशवासियों को कोई उत्साह नहीं मिलता था बल्कि सेना के प्रति घृणा के भाव ही पैदा होते थे। परन्तु वीर सावरकर ने इंग्लेण्ड के इण्डिया-हाऊस में बैठकर एक पुस्तक लिखी जिसमें १८५७ के सेना-विद्रोह को देश का प्रथम स्वतन्त्रता - संग्राम बताया। उसमें भाग लेने वाले महारानी लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे, नाना साहब, मंगल पाण्डे, रावतुलाराम आदि को देशभक्त बताया। यह संग्राम देश को आजादी दिलाने का प्रथम प्रयास था। अंग्रेजी सरकार ने इस पुस्तक पर छपने से पहले ही पाबन्धी लगा दी थी, परन्तु वीर सावरकर ने इसको फ्रान्स में छपवा कर भारत में क्रान्तिकारियों के पास भेज दी थी। क्रान्तिकारियों ने इस पुस्तक से बड़ी प्रेरणा ली। सरदार भगतसिंह ने इस पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित करवाया और सुभाष चन्द्र बोस ने भी इस ग्रन्थ का प्रकाशन करवाया। इस प्रकार से हम देखते हैं कि क्रान्तिकारियों ने इन तीन पुस्तकों से अपने जीवन को भारत माता की बलिबेदी पर आहूति देने में काफी प्रेरणा मिली।

मुझे इस बात का बड़ा अफसोस है कि कांग्रेस ने अपने साठ साल के शासन काल में हमारे देश के क्रान्तिकारियों को भुलाने की काफी चेष्टा की गई, जिससे देश के नवयुवक क्रान्तिकारियों के इतिहास से अनभिज्ञ रह गये। अब राष्ट्रीय भावना की सरकार आई है, आशा है कि अब उन वीर क्रान्तिकारियों को अवश्य ही सम्मान देगी।

द्वारा-गोविन्दराम आर्य
एण्ड संस
१८० महात्मा गान्धी रोड
दोतल्ला, कोलकाता

पृष्ठ.४ का शेष भाग...

विस्फोटक पंदार्थ के उपादान क्यों बने? हमारे विचार से वे सब इसलिये बने ताकि वैज्ञानिक जन तरक्की करके उन सबसे संसार का उपकार करें।

वनस्पतियों में चंदन, हींग, नारियल, कपास, नीबू , चाय आदि तरह तरह के औषधियुक्त वृक्षों की उत्पत्ति कैसे हुई क्यों हुई इन समस्त रचनाओं को यदि बुद्धि पूर्वक विचार किया जाय तो ऐसा लगता है कि उन सभी में विशेष मात्रा एवं विज्ञान छिपा हुआ है।

जैनेवा के पास स्थित सर्नवेधशाला के भूगर्भ में १११ देशों के वैज्ञानिक दो टीमों ने सृष्टि के सार की खोज कर रहे थे, दोनो टीमों ने एक ही निष्कर्ष पर पहुंचते हुए कहा कि उन्होंने सृष्टि के मूल तत्व को खोज लिया है, इस सृजन कारक कण से सृष्टि के कई रहस्य खुल जाने की आशा वे लोग रखते हैं। परमाणु के अन्दर जिस कण की खोज की गई है, वैज्ञानिकों का मानना है कि वही कण, परमाणुओं को ठोस एवं द्रव्यमान बनाता है। अतः वही सृजन कारक है। किन्तु जिस हिंग्स बोसन को गॉडपार्टिकल अथवा ईश्वरीय कण कहा गया है। वह भी जड़ है उसकी भी गति हैं इसलिये वह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ एवं सर्वदृष्टा सारी सृष्टि का रचयिता नहीं हो सकता है। उस विशेष कण में केवल परमाणु को द्रव्यमान बनाने का ही गुण हो सकता है। मानव मस्तिष्क को नही। वह आत्मान भी नही है। आत्मा भी अमिश्रित द्रव्य है, उसे किसी ने द्रव्यमान नहीं बनाया है, वह अनादि और असंख्य हैं, उस अति सूक्ष्म आत्मा में ज्ञान करने कर्म करने और भोग करने के गुण विद्यमान हैं, जब उसका शरीर से सम्बन्ध होता है उसमें व्याप्त उसके सारे ज्ञानादि गुण प्रकट होने लगते हैं। जिस प्रकार मशीन बनाने के पूर्व उनके एक-एक पुर्जे अलग-अलग थे उसी प्रकार सृष्टि के पूर्व उनके सत, रज, तम के परमाणु अंतरिक्ष में विद्यमान थे, तो जैसे वैज्ञानिक ने उन अलग-अलग पूर्जे को जोड़कर इंजन तैयार कर चालूकर दिया वैसे ही विज्ञान स्वरूप परमेश्वर ने अपने सामर्थ से प्रकृति के परमाणु कणों के समुहों से यथायोग्य बुद्धि पूर्वक जोड़कर पंचतत्व एवं सूर्य चन्द्रादि को इस सौर जगत में उत्पन्न कर दिया। कैसे किया कब किया और क्यों किया, इसका सही ज्ञान किसी को नही हैं। परन्तु इन लोकों में सबसे पहले पृथ्वी को उत्पन्न किया। ब्रा० में लिखा है इयम (भूमिः) वाएषां लोकानां प्रथम सृज्यत। अर्थात यह भूमि इन लोको में (अन्यतम एवं) सर्वप्रथम उत्पन्न हुई। दैवी सृष्टि में भूः व्याहृति की उत्पति के समय ही भूमि बनी थी, सभूरिति व्याहरत स भूमिमसृजत (तै० बा० २,२,२) अतः परमेश्वर ने इसी को प्राणी जगत से पूर्णकर सत्यम् शिवम और सुन्दरम बनाया।

मु.पो. मुरारई जिला-वीरभूम
(प.बंगाल-७३१२१६)

ठ.२ का शेष भाग...

श्वर शरीर में अधिक समय तक रहने की, जैसा बहुत से लोग समझते हैं। योगदर्शन में महर्षि तञ्जलि ने अभिनिवेश (मृत्यु-भय) को क्लेश और अविद्या को उसका कारण माना है।

स्वर्ग तथा मोक्ष के सम्बन्ध में उपरोक्त प्रारम्भिक ज्ञान के आधार पर इन दोनों में अन्तर निम्न प्रकार समझना चाहिये -

(१) स्वर्ग जीव को शरीर प्राप्त होने पर ही मिलता है अर्थात्- जन्म-मरण के चक्र में रहना पड़ता है, जबकि मोक्षावस्था में जीव को स्थूल अथवा सूक्ष्म शरीर धारण करने की आवश्यकता नहीं रहती।

(२) स्वर्ग में रहते हुए जीव सुख के साथ-साथ दुःख भी भोगता है, प्राप्त सुख भी क्षणिक और दुःख मिश्रित होता है, जबकि मोक्ष में केवल आनन्द की ही अनुभूति होती है, जो क्षणिक न होकर निरन्तर बना रहता है।

(३) सांसारिक (स्वर्गीय) सुख केवल एक जन्म के लिए प्राप्त होता है, जिसकी औसत अवधि ७० या ८० वर्ष होती है। उक्त अवधि में मनुष्य यदि अशुभ कर्म अधिक करे तो आगामी जन्म में उसे नरक की प्राप्ति भी हो सकती है। मोक्षावस्था की अवधि बहुत बड़ी होती है, जिसे मुण्डकोपनिषद् (३-२-६) में परान्तकाल कहा गया है। सृष्टिकाल ४ अरब ३२ करोड़ वर्षो का होता है और इतना ही समय प्रलयकाल का भी होता है। ३६ हजार बार सृष्टि और प्रलय काल रहने तक जीव-मुक्त अवस्था में परमेश्वर का आनन्द लेता हुआ विचरण करता है।

स्पष्ट है कि मोक्ष की तुलना में स्वर्ग का सुख समुद्र के सम्मुख बिन्दुवत् ही है। इसीलिए मनुष्य का सर्वोत्तम और अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति ही है। इस चरम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कैसे कर्म करना चाहिये ? इसका उत्तर पाने के लिए पहले कर्म के भेद जानना आवश्यक है। योगदर्शन (४-७) के अनुसार मनुष्य के कर्मो को चार भागों में विभक्त किया गया है- (१) शुक्ल कर्म (शुभ कर्म - पुण्य), (२) कृष्ण-कर्म (अशुभ कर्म - पाप), (३) शुक्लकृष्णकर्म (शुभाशुभ मिश्रित - पाप-पुण्य मिश्रित), (४) अशुक्ल - अकृष्ण कर्म (पुण्य-पाप रहित)। इनमें से प्रथम तीन सकाम कर्म कहलाते हैं, जो कामना या सांसारिक फल की इच्छा से कए जाते हैं। अतः इनका सांसारिकफल भी प्राप्त होता है और इनसे कर्माशय भी बनता है जो अगले जन्म का आधार होता है। चौथे प्रकार का कर्म निष्काम-कर्म कहलाता है, जिसमें सांसारिक कामनाओं का सर्वथा त्याग होता है। ये कर्म केवल देहरक्षा और परोपकार की भावना से किए जाते हैं, अतः वासनाएँ नहीं रहती और कर्माशय नहीं रहता। फलस्वरूप अगला जन्म भी नहीं होता। ऐसे निष्काम योगी ही अपने क्लेशों को पूर्णतः 'दग्धबीज' कर लेने के उपरान्त शरीर त्यागकर मोक्षावस्था को प्राप्त करते हैं।

क्लेश (विपर्यय-मिथ्या ज्ञान) पांच प्रकार के होते हैं - अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश (योगदर्शन २-३)। इन्हीं से कर्माशय बनता है, जो पुनर्जन्म का कारण होता है (यो० द० २-१२)। इनमें अविद्या प्रधान है, जो अन्य चारों क्लेशों की जननी भी है (यो० द० २-४)। योगी विवेकख्याति से इन सभी क्लेशों को शनैः-शनैः क्षीण करता हुआ अंततः दग्धबीज कर देता है। [illegible]किसे कहते हैं ? अनित्य (नाशवान) संसार, शरीर और सांसारिक पदार्थों को नित्य [illegible]शी, शाश्वत) मानते हुए व्यवहार करना, मलमय शरीर और दुष्टकर्मो को, जो अपवित्र हैं, [illegible]मानते हुए व्यवहार करना, अत्यन्त विषय सेवन रूप दुःख को सुख मानना और मूर्त्ति आदि जड़ पदार्थों को चेतनवत् मानना अविद्या कहलाती है (यो०द० २-५)। यह अविद्या ही सकल दुःखों का कारण है। महर्षि दयानन्द सरस्वती 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' के 'मुक्ति विषय' में लिखते है - ''..... अस्मितादि चार क्लेशों और मिथ्या भाषणादि दोषों की माता अविद्या है, जो कि मूढ़ जीवों को अन्धकार में फंसा के जन्म मरणादि दुःखसागर में सदा डुबाती है। परन्तु जब विद्वान् और धर्मात्मा उपासकों की सत्यविद्या से अविद्या विच्छिन्न अर्थात् छिन्नभिन्न होके नष्ट हो जाती है, तब वे जीव मुक्ति को प्राप्त हो जाते हैं।''

मो. ६४५०००१४४१

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ

गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ (उ.प्र.)

प्रवेशार्थ सूचना

गंगा किनारे शान्त प्रकृति के वातावरण में स्थित गुरूकुल पूठ में प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। सं.वि.वि. वाराणसी से शास्त्री आचार्य तक मान्यता प्राप्त एवं उ.प्र. मा.शि. परिषद लखनऊ से मध्यमा (१२) तक मान्यता प्राप्त तथा सुन्दर दिनचर्या धनुर्विद्या का विशेष प्रशिक्षपण योगासन प्राणायाम आर्यवीरदल का व्यायाम प्रशिक्षण अनिवार्य रूप में प्रदान किया जाता है। प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा की भी सुन्दर व्यवस्था है। अपने बच्चों को देश भक्त गुरू भक्त, मातृ-पितृ भक्त बनाने के लिए आज ही संकल्प लेकर शीघ्र सम्पर्क करें स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी महाराज की साधना स्थली पर आपका हार्दिक स्वागत है।

दिनेश आचार्य	धर्मेश्वरानन्द सरस्वती	राजीव आचार्य
कार्यालयाध्यक्ष	संचालक	प्राचार्य
दूरभाष-०५२२-२२८६३२८	मो. ९८३७४०२१९२	मो. ९८३७४०२१९२

एहसासे - दर्द

आभास हो रहा, हम विखर जायेंगे,
स्वः स्वार्थ में, हम क्या पाएंगे।
सावधान- है, सम्मुख अंधियारा,
अहं छोड़- नहि-२ मिट जाएंगे।।
बड़ा नहीं तू, बड़ा नहीं मैं,
सद् धर्म बड़ा है, है उसे समझना,
वनो, वृक्ष तना नहिं मूल है बनना,
जहां निवास केवल सत्य-धर्मा,
दीप है तू जले तेल सहारे
जागो, जागो, नहि ? अधियारे आंएगे।
सावधान ....।
जिस बात का गुमान तुझे है पगले,
है। दम्भ ? यह है मानव दुर्बलता,
दूर-दर्शी बन, परख स्वयं को,
यह विद्युत है! है मानव चंचलता,
भाषा है दयानन्दी! समझ ले इसको
बन सद् धर्मी अच्छे दिन आएगे।
सावधान ....।
कल तक तुझे जो अच्छा लगता था,
तेरी स्वार्थ दृष्टि ने उसे बुरा बनाया,
अहंकारी! भविष्य वना नहि, डूबने वाला,
अरे! जो डूबा इसमे वह निकल न पाया,
सावधान कर रहा है 'सागर' तुझको,
जग भवसागर हम डूब जाएँगे।
सावधान ....।

रचयिता-डा० वी.पी. सागर
अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

कृपा करो अविलम्ब

प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।
अवरोधों ने और विरोधो ने गाड़े हैं खम्भ।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।
भौतिकवादी युग में प्रतिभा मेरी पिछड़ रही है।
भक्त और भगवान प्रतिष्ठा सबकी बिगड़ रही है।
मेरी पहुँच आप तक ही है और नहीं अवलम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।
आतंकी हमलो से त्रस्त हो रही जनता सारी।
पुनः द्रोपदी की भाँति निर्वस्त्र हो रही नारी।
नक्सलवादी निरपराध पर चला रहे हैं बम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।
अवसरवादी चाटुकार अब टंगड़ी मार रहे हैं।
शुद्ध सात्विक सत्य, खेल में नित दिन हार रहे हैं।
पहुँच पूछ पर अपनी मुझको दिखा रहे हैं दम्भ।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।
सम्भवामि युगे-युगे को करो सार्थक नाथ।
पूरा न्याय करो हे भगवन, सुजन-दुष्ट के साथ।
सज्जन की रक्षा हो प्रभु जी, दुष्ट न पाए क्षम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।
बहुत दिया था पहले तुमने, बहुत दे रहे आज।
सदा सर्वदा सभी सँवारे, तुमने मेरे काज।
मेरी हर पुकार पर आए, कछु ना किया विलम्ब।
प्रभु अब कृपा करो अविलम्ब।

-हितेश कुमार शर्मा
गणपति भवन
सिविल लाइंस, बिजनौर

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, ल फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२५६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

स्वास्थ्य चर्चा-

समस्या आपकी - समाधान हमारा

आदरणीय डॉ. साहब,

सादर नमस्ते !

आजकल बरसात का मौसम चल रहा है। इस मौसम में हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए व किस प्रकार का खान-पान सेवन कर हम स्वयं को स्वस्थ रख सकते हैं। इस मौसम में होने वाली सामान्य बीमारियों की जानकारी, उनके बचाव व घरेलू उपचार भी बताने की कृपा करें।

- लोकेश आर्य, तिलहर (शाहजहाँपुर)

प्रिय लोकेश जी,

आपने मौसम की सामान्य समस्याओं को उठाया है जो कि सभी के लिये जानना आवश्यक है। एतदर्थ धन्यवाद।

हमारे भारत देश में छः ऋतुएँ होती है जो संसार के किसी अन्य देश में नहीं होती। इन ऋतुओं में हमें अपने शरीर को ठीक रखने के लिये क्या खाना चाहिए, क्या पीना चाहिए, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए तथा इनमें कौन-२ से रोग होते हैं यह जानना बहुत जरूरी है, क्योंकि हर ऋतु या मौसम की जलवायु अन्न व घरेलू दवाओं के असर को ध्यान में रखकर ही उनका सेवन करना होता है अन्यथा बहुत सी बीमारियाँ हमारे शरीर को घेर लेती है।

इस समय का मौसम जिस में अषाढ़, सावन, भादों, जिन्हें अंग्रेजी कलैण्डर में जुलाई, अगस्त और सितम्बर के महीने भी मान सकते हैं बरसात का मौसम माना गया है। जब गर्मी में सूरज की तेज किरणों की जलन से सभी प्राणियों के शरीर में पोषण और चिकने पदार्थों की कमी होने से कमजोरी आती है वहीं उसके फौरन बाद बरसात होने से इस मौसम में उन्हें राहत मिलती है।

वर्षा-ऋतु में सूरज के दक्षिणायन होने से इसे विसर्ग काल का प्रारम्भ भी मानते हैं, विसर्ग-काल शुरू होने से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि अब शरीर का बल बहुत बढ़ने वाला है और स्वास्थ्य की कोई चिन्ता नहीं रहेगी, सही अर्थों में यह मौसम आदान काल और विसर्ग काल के मिलने का मौसम होता है इस मौसम में शरीर की शक्ति का कम होना, जो कि आदान काल में शुरू हुआ था अभी पूरी तरह खत्म नहीं हो पाता है। इसलिये बरसात के मौसम में गर्मी के खान पान तथा रहन-सहन को धीरे-धीरे छोड़ते हुए बरसात के खान-पान और रहन-सहन को अपनाना चाहिए।

आयुर्वेद की दृष्टि से यदि हम देखें तो बरसात में शरीर में बात दोष का प्रकोप तथा पित्त का संचय होना प्रारम्भ हो जाता है। गर्मी के मौसम यानि कि मई, जून में शरीर में यह बात या वायु संचित होती है ऐसा गर्मी की अधिकता के कारण रूक्षता पैदा होने तथा ठण्डी चीजें खाने से होता है। यही बात या वायु जब बरसात में प्रकुपित होती है तो वायु विकारों को उत्पन्न करती हुई शरीर में जकड़न पीठ व कमर में दर्द, जोड़ों में सूजन और दर्द व हाथ पैरों में फूटन पैदा करती है। इसके अलावा इस मौसम में अधिक पानी बरसने से चारों ओर पानी भर जाता है। जानवरों के मल-मूत्र के चारों ओर फैलने तथा कीचड़ हो जाने से गंदगी होकर मच्छर और मक्खियां भी अधिक संख्या में पैदा हो जाती हैं जिससे हमारा खान-पान भी दूषित हो जाता है और उसको खाने-पीने से हम बहुत सी बीमारियों को चाहे अनचाहे न्योता दे बैठते हैं।

इस मौसम में नमी अधिक रहने से शरीर का पसीना भी नहीं सूख पाता है जिससे तरह-तरह की खाल, चमड़े की बीमारियाँ भी इन्हीं दिनों में बहुतायत से होती हैं। इस मौसम में अधिकतर हम लोग घरों में ही रहते हुए चाट, पकौड़ी, समोसे जैसी तली भुनी, तीखी, खट्टी व अत्याधिक मसाले वाली चीजों को खाते पीते रहते हैं जिनसे भोजन पचाने की अग्नि मन्द होती है। जिस कारण अफारा, पेट में गैस अथवा दर्द की शिकायत हो जाती है साथ ही दूषित खान पान से दस्त, जी मिचलाना व उल्टी वगैरह होने लगती है। कभी-कभी सर्दी, जुकाम, बुखार जैसे रोग भी हो जाते हैं सही अर्थों में देखा जाये तो यह बरसात का मौसम बात तथा पित्त सम्बन्धी रोगों के लिये बहुत ही उपयुक्त है। इस मौसम में हमेशा ताजा हल्का, जल्दी पचने योग्य तथा अग्नि को प्रदीप करने वाला खाना खाना चाहिए। कभी भी रूखी-सूखी, तीखी तथा खटाई व अधिक मसाले वाली चीजों को नहीं खाना चाहिये। बासी, सड़ा गला खुला रखा हुआ भोजन भूल कर भी न खायें।

ठण्डे पेय पदार्थ जैसे लस्सी, ठण्डा दूध, बाजार में मिलने वाले विभिन्न बर्फ वाले या अन्य ठंडे पेयों को नहीं पीना चाहिये। दिन में सोना, ठंडी हवा में घूमना, बहुत अधिक शारीरिक श्रम या व्यायाम से बचना बहुत जरूरी है। ब्रह्मचर्य का पालन तथा योगासन नियमित रूप से किये जा सकते हैं। घर से बाहर निकलते समय हल्के रंग के या सफेद सूती कपड़ों को पहनें तथा छाता, बरसाती व जूतों का प्रयोग अवश्य करें। जहाँ तक हो भीगने से बचें तथा भीग जाने पर जितनी जल्दी हो कपड़ों को बदल लें।

इस मौसम में पानी हमेशा उबाल कर काम में लावें। नदी, तालाब, पोखर तथा उथले कुओं का पानी प्रयोग न करें यदि जरूरी हो तो हमेशा पीने से पहले उबाल लें। फल व सब्जियों को पोटाश के पानी में धोकर ही प्रयोग में लावें। खाने में अचार, खट्टी इमली का प्रयोग नहीं करना चाहिये, यदि शरीर या जोड़ों में दर्द रहता हो तो नहाते समय पानी हल्का गर्म ही काम में लावें। बरसात के दिनों में प्रतिदिन स्नान करना चाहिए ताकि खाल साफ व स्वच्छ बनी रहे। हो सके तो बरसात में अपने खाने पीने को इस प्रकार नियमित कर लेवें -

सुबह नाश्ते में मीठा या नमकीन दलिया, सेंकी हुई मक्खन लगी हुई डबल रोटी, तुलसी की या गुरूकुल की अथवा साधारण चाय या दूध लेवें।

दोपहर के खाने में गेहूँ की रोटी, मूँग या अरहर की दाल, पुराने चावल तथा पोटाश के पानी में धो कर बनाई हुई कम मसाले वाली हरी सब्जियों को लेना चाहिए। खाना खाना के बाद एक गिलास नमक पड़ा व जीरे से छौंका हुआ ताजा मठ्ठा अवश्य पियें।

तीसरे पहर ताजे व मौसमी फलों जैसे अनार/पका आम व केला सेवन करना चाहिये यदि चाय लेते हों तो उसके साथ बेसन के बने हल्के मसाले - दार पदार्थ अथवा तली हुई मूंग की दाल ले सकते है।

रात के खाने में गेहूँ की रोटी के साथ हरी सब्जियाँ, नारियल की चटनी, मूंग की दाल के पापड़ का प्रयोग करें। अदरख का प्रयोग भी लाभदायक होता है।

इस बरसात के मौसम में होने वाली बहुत सी बीमारियों में से खाल या चमड़े में होने वाली बीमारियां जैसे खारिश, खुजली, फोड़ा-फुंशी, एक्जिमा या अकौता और दाद बगैरह मुख्य हैं। इनसे बचने के लिये -

शरीर के गुप्त स्थानों को नमी से बचाना चाहिये, खाल को सूखा रखने के लिये खुशबूदार औषधि वाले महीन पाउडरों का प्रयोग करना चाहिये। यदि फिर भी खाल या चमड़े की बीमारियां पैदा हो जावें तो उनको घरेलू नुस्खों का प्रयोग कर ठीक करना चाहिये इसके लिये -

खुजली होने पर - नीम की पत्तियाँ पानी में उबाल कर इस गुनगुने पानी से नहायें साथ ही १०० ग्राम तिल के तेल में २ ग्राम कपूर मिलाकर खुजली वाली जगहों पर दिन में तीन-चार बार लगाने से आराम मिलता है। इसके अलावा दही और सरसों के तेल को मिलाकर मालिश करने से भी खुजली में आराम मिलता है।

फोड़ें फुंसी होने पर - नीम की छाल को पत्थर पर पानी डालकर घिसें फिर उस लेप को छोटी-छोटी फुंसियो पर लगायें।

अधपका या कच्चा फोड़ा होने पर प्याज व आटे की पुल्टिस बनाकर फोड़े पर लगायें। फूट कर मवाद या पीव निकल जाने के बाद घाव को अच्छी तरह साफ कर, २ ग्राम शुद्ध गंधक को १० ग्राम नारियल या खोपड़े के तेल में मिलाकर उस जगह पर लेप करें।

एक्जीमा या अकौता - होने पर काली मिर्च ५ ग्राम व नीम की छाल ५ ग्राम को १० ग्राम सरसों के तेल में मिलाकर उस जगह पर लगावें।

दाद होने पर - चकवड़ या दादमार के बीजों की लुगदी को दाद वाली जगह पर नीम के पत्तों के रस से अच्छी तरह धोने व साफ करने के बाद, लगाने से दाद ठीक होकर दोबारा नहीं होता है।

खाल की बीमारियां होने पर नहाते समय बाजार में मिलने वाले साबुनों में से केवल नीम वाला साबुन ही प्रयोग करें।

इस मौसम में खाने को पचाने वाली अग्नि कमजोर पड़ जाने के कारण पेट में अफारा, गैस, तथा अपच वगैरह हो जाती है इसके लिये हरें या हरड़ का चूर्ण २ ग्राम, तुलसी के पत्ते। ग्राम अजवायन आधा ग्राम तथा सेंधा नमक चौथाई ग्राम लेकर खाना खाने के बाद सुबह शाम साफ पानी से लेने पर कुछ ही देर में यह तकलीफ दूर हो सकती है।

कभी-कभी गंदे पानी को पीने या खाना बनाने के काम में लेने से पीलिया या कामला जैसी घातक और जान लेवा बीमारी भी बरसात में ही ज्यादातर हो जाती है। इसमें रोगी की भूख धीरे-२ खत्म होती जाती है, कमजोरी बढ़ती जाती है आँख, खाल और नाखूनों पर पीला पन आने लगता है। कभी-कभी रोगी को बुखार भी आता है तथा रोग बढ़ने पर रोगी को बेहोशी भी होने लगती है। प्रायः ऐसे रोगी को पेशाब बहुत ज्यादा पीला तथा मल मिट्टी जैसा या सफेद होने लगता है।

ऐसे लक्षण दिखने पर रोगी को खाने पीने में परवल, पालक, बथुआ, कच्चा पपीता, पुनर्नवा के पत्ते, मूली व गन्ने का रस का रस, मौसमी तथा मठ्ठे का सेवन बहुतायत से कराना चाहिये। इ साथ-साथ गिलोय का रस २० ग्राम हर रोज एक हफ्ते तक पिलावें। मक के पत्ते के रस को मूली के रस में मिलाकर १०-१५ ग्राम प्रति दिन पिला से आराम मिलता है, हो सके तो ग्लूकोज को भी पानी में डालकर पिलायें।

कामला या पीलियाँ के रोगी को बीड़ी, सिगरेट, चिलम, तम्बाकू को बिल्कुल छोड़ देना चाहिये। सरसों के तेल, हींग, उड़द, गर्म मसाला, गंदा पानी, दही और शराब का प्रयोग बहुत ही नुकसान देय है।

ऐसे रोगी को दिन में सोने, गुस्सा करने, धूप में या वैसे ही घूमने फिरने और मैथुन से स्वयं को बचाना चाहिये। जहाँ तक हो पूरी तरह आराम करें।

इसके अतिरिक्त इस मौसम में दूषित जल के सेवन कर लेने से आन्त्रिक ज्वर (टाइफाइड) होने की भी पूरी सम्भावना रहती है। इसलिये पानी सदैव उबालकर न भोजन सदैव ताजा व हल्का लेना चाहिए।

बरसात में तरह-तरह के विषैले कीड़े-मकोड़ों के अपने बिलों से बाहर निकल आने के कारण इनके शरीर पर चलने फिरने या काटने से इनका विषैला असर भी शरीर पर पड़ता है ऐसे में -

यदि बिच्छू ने डंक मारा हो तो इमली के बीज को घिसकर लगाने से फौरन आराम मिलता है।

कानखजूरे का जहर कलिहारी की जड़ को पानी में पीस कर लगाने से उतर जाता है।

साँप के काटने की जगह कटसरैया का बीज घिसकर लगाने तथा पीसकर पिलाने से या भटकटैया की जड़ को पानी में पीसकर पिलाने से साँप का जहर उतर जाता है।

मकड़े के विष को दूर करने के लिए सरसों के तेल में चिरौंजी पीसकर या सोंठ और जीरे को पानी में पीसकर लेप करना चाहिए।

विषैली घासों या सर्दी गरमी के कारण शरीर में कभी-कभी चकत्ते पड़ जाते है जिनमें बहुत खुजली होती है इनमें गेरू को पानी में घोलकर लेप करने तथा पीने से तुरन्त आराम मिलता है।

बरसात में होने वाले तरह-तरह के विषैले जहरीले कीट मकौड़े का जहर काटने या छूने की जगह पर पिप्पली को घिस कर लगाने से दूर हो जाता है।

डॉ. भानु प्रकाश आर्य
पूर्व वरिष्ठ चिकित्सक
लखनऊ
चलभाष- ६४१५१५८५७१

स्वामी—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक—आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक—श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है—सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।